KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग
आरंभिक समाज (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 3

Pritesh Joshi

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

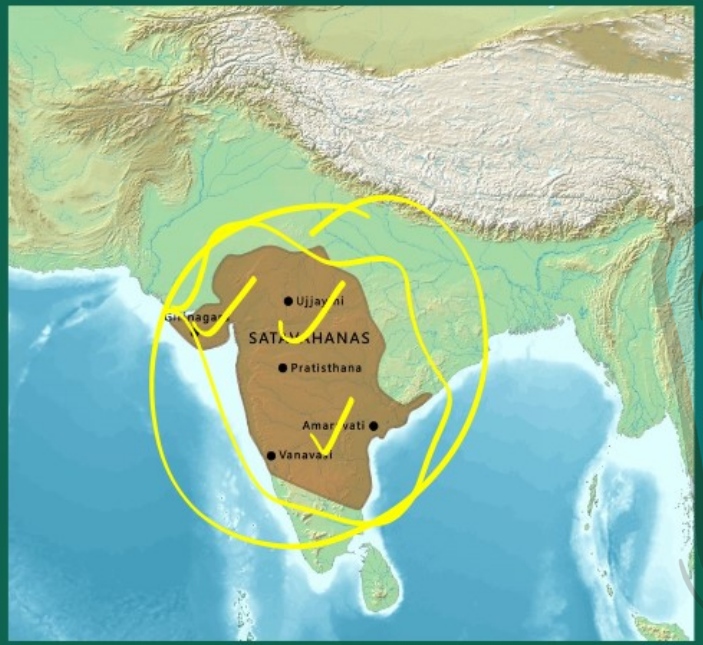

अभिलेखों से सातवाहन राजाओं के नाम

अभिलेखों से सातवाहन राजाओं की कई पीढ़ियों के नाम प्राप्त हुए हैं। इन सभी नामों में राजा की एक जैसी पदवी है। अगले शब्द का अंत पुत्त से होता है। यह एक प्राकृत शब्द है जिसका अर्थ 'पुत्र' है।

गोतमी और वसिथि स्त्रीवाची नाम हैं गौतम और वशिष्ठ के। ये दोनों वैदिक ऋषि थे जिनके नाम से गोत्र है।

राजा गोतमी-पुत्त सिरी-सातकनि

राजा वसिथि-पुत्त (सामि) सिरि-पुलुमायि

राजा गोतमी-पुत्त सामि-सिरि-यन-सातकनि

राजा मधारि-पुत्त स्वामि-सकसेन

राजा हरिति-पुत्त चत्तरपन-सातकनि

राजा हरिति-पुत्त विनहुकद चतुकुलानन्द-सातकमनि

राजा गोतमी-पुत्त सिरी-विजय-सातकनि

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गोत्र
① पिता → पति
② अर्थनिनाह

सातवाहनों में सबसे प्रमुख शासक शातकर्णी ने सर्वप्रथम मां का गोत्र लगाना प्रारम्भ किया। उत्तरोत्तर ये प्रथा चलती रही।

उपनिषद में मातृनाम

बृहदारण्यक उपनिषद में जो आरंभिक उपनिषदों में से एक है ।

आचार्यों और शिष्यों की उत्तरोत्तर पीढ़ियों की सूची मिलती है, जिसमें से कई लोगों को उनके मातृनामों से निर्दिष्ट किया गया था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



एक सातवाहन राजा तथा उसकी पत्नी सातवाहन राजाओं की आकृतियां बहुधा उन गुफाओं की भित्तियों पर उत्कीर्ण की जाती थीं जिन्हें बौद्ध भिक्षुओं को दान में दिया जाता था। (200 ई. पूर्व की मूर्ति है)

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1) पिता → पति ×

2) रानियां

=

✓

- कुछ सातवाहन राजा बहुपत्नी प्रथा (अर्थात् एक से अधिक पत्नी) को मानते थे।
- सातवाहन राजाओं से विवाह करने वाली रानियों के नामों से यह इंगित होता है कि उनके नाम गौतम तथा वसिष्ठ गोत्रों से उद्भूत थे जो उनके पिता के गोत्र थे।
- इससे प्रतीत होता है कि विवाह के बाद भी अपने पति कुल के गोत्र को ग्रहण करने की अपेक्षा, जैसा ब्राह्मणीय व्यवस्था में अपेक्षित था, उन्होंने पिता का गोत्र नाम ही कायम रखा।
- यह भी पता चलता है कि कुछ रानियाँ एक ही गोत्र से थीं। यह तथ्य बहिर्विवाह पद्धति के नियमों के विरुद्ध था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

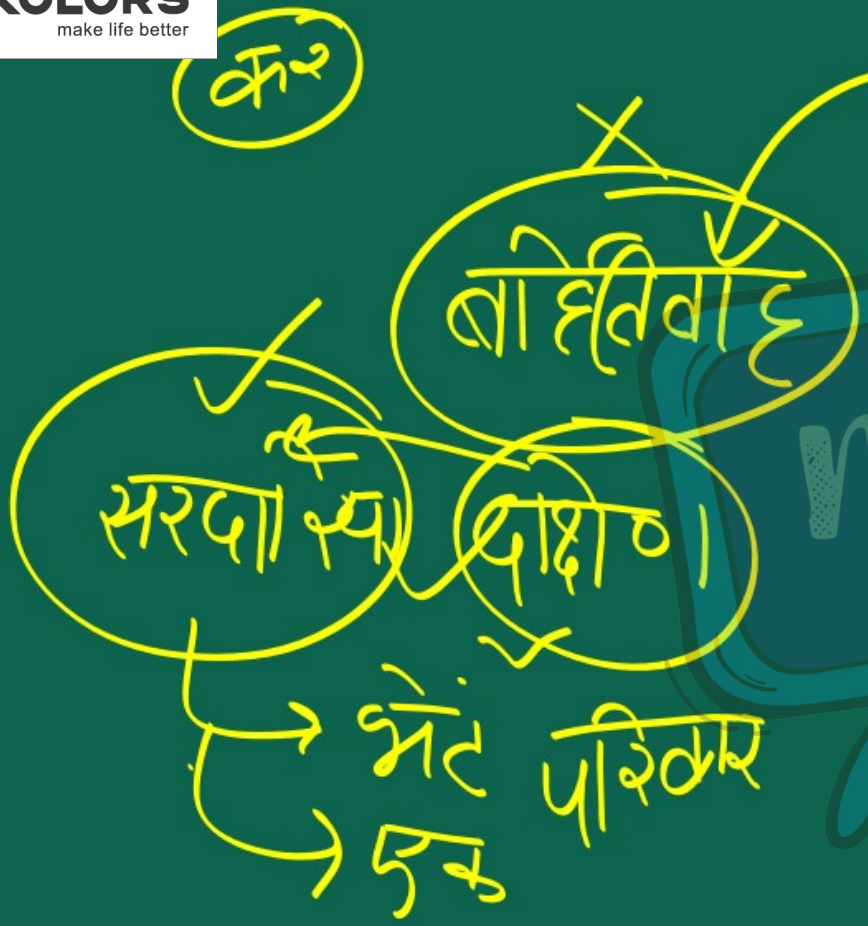

- वस्तुत: यह उदाहरण एक वैकल्पिक प्रथा अंतर्विवाह पद्धति अर्थात् बंधुओं में विवाह संबंध को दर्शाता है जिसका प्रचलन दक्षिण भारत के कई समुदायों में भी है।
- बांधवों के साथ जोड़े गए विवाह संबंधों की वजह से एक सुगठित समुदाय उभर पाता था।
- संभवत: उपमहाद्वीप के और भागों में अन्य विविधताएँ भी मौजूद थीं किंतु उनके विशिष्ट ब्योरों को पुनर्निर्मित करना संभव नहीं हो पाया है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



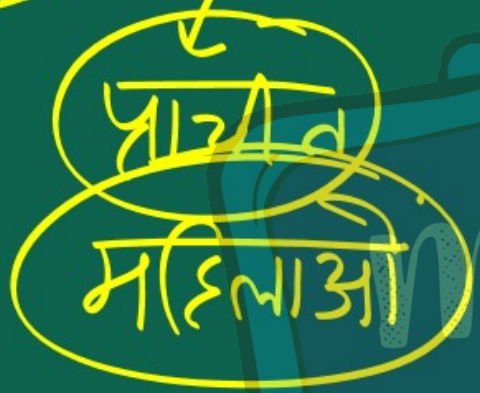

क्या माताएँ महत्वपूर्ण थीं?

- सातवाहन राजाओं को उनके मातृनाम से चिह्नित किया जाता था। इससे यह प्रतीत होता है कि माताएँ महत्वपूर्ण थीं।
- यद्यपि माताएं महत्वपूर्ण होने के निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले बहुत सावधानी बरतनी होगी क्योंकि सातवाहन राजाओं के संदर्भ में हमें यह ज्ञात है कि सिंहासन का उत्तराधिकार पितृवंशिक होता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

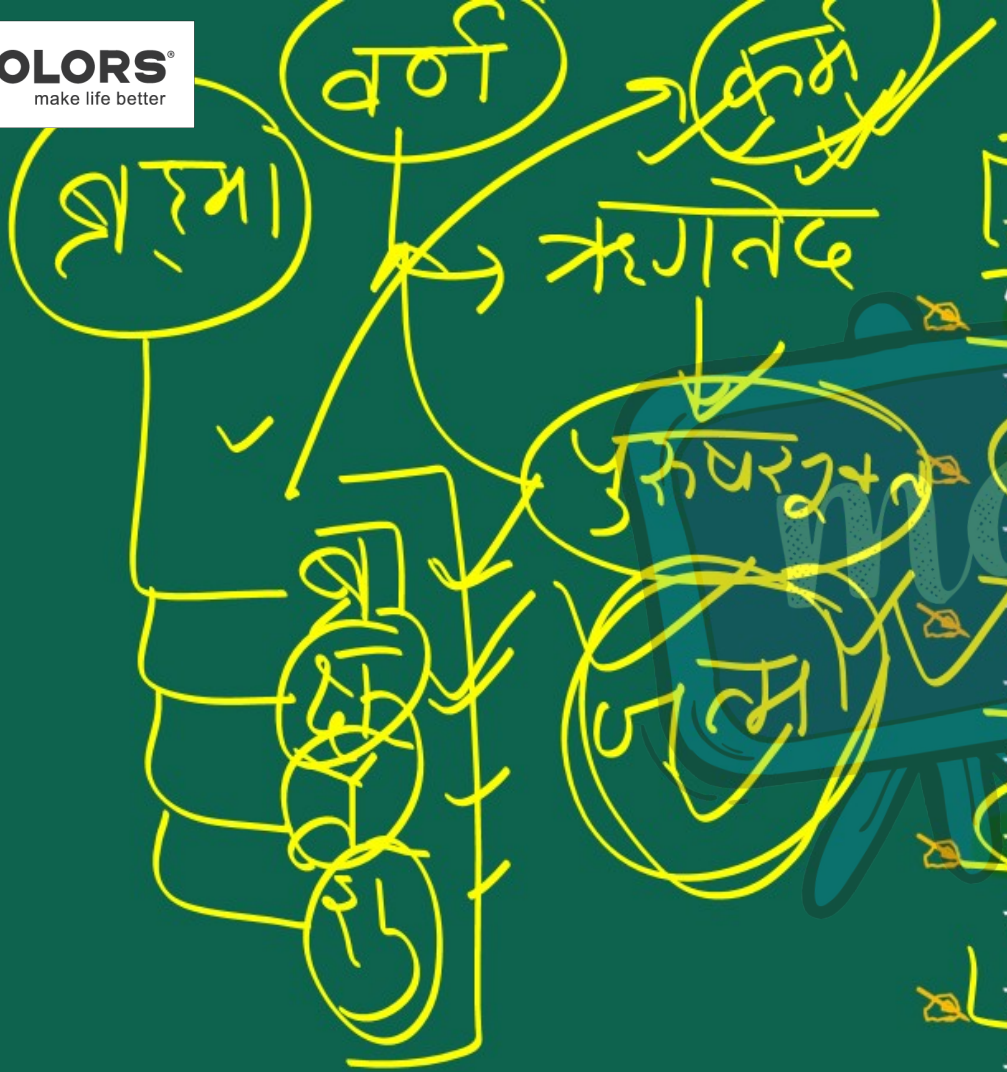

सामाजिक विषमताऐं

वर्ण व्यवस्था के दायरे में और उससे परे :-

- 'जाति' शब्द एक सोपानात्मक सामाजिक वर्गीकरण को दर्शाता है।
- धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में एक आदर्श व्यवस्था का उल्लेख किया गया था।
- ब्राह्मणों का यह मानना था कि यह व्यवस्था जिसमें स्वयं उन्हें पहला दर्जा प्राप्त है, एक दैवीय व्यवस्था है।
- शूद्रों और 'अस्पृश्यों' को सबसे निचले स्तर पर रखा जाता था।
- इस व्यवस्था में दर्जा संभवतः जन्म के अनुसार निर्धारित माना जाता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धार्मिक शैक्षणिक

'उचित' जीविका :-

- धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में चारों वर्गों के लिए आदर्श 'जीविका' से जुड़े कई नियम मिलते हैं।
- ब्राह्मणों का कार्य अध्ययन, वेदों की शिक्षा, यज्ञ करना और करवाना था तथा उनका काम दान देना और लेना था।
- क्षत्रियों का कर्म युद्ध करना, लोगों को सुरक्षा प्रदान करना, न्याय करना, वेद पढ़ना, यज्ञ करवाना और दान-दक्षिणा देना था।
- वैश्यों का कार्य – यज्ञ करवाना, दान दक्षिणा देने के साथ साथ कृषि, गौ-पालन और व्यापार का कर्म भी अपेक्षित था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जन्म

महाभारत

- शूद्रों के लिए मात्र एक ही जीविका थी- तीनों 'उच्च' वर्णों की सेवा करना।
- इन नियमों का पालन करवाने के लिए ब्राह्मणों ने दो-तीन नीतियां अपनाईं
  1. उन्होंने बताया कि वर्ण व्यवस्था की उत्पनि एक दैवीय व्यवस्था है।
  2. वे शासकों को यह उपदेश देते थे कि वे इस व्यवस्था के नियमों का अपने राज्यों में अनुसरण करें।
  3. उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि उनकी प्रतिष्ठा जन्म पर आधारित है।
- यद्यपि ऐसा करना आसान बात नहीं थी। अतः इन मानदंडों को बहुधा महाभारत जैसे अनेक ग्रंथों में वर्णित कहानियों के द्वारा बल प्रदान किया जाता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

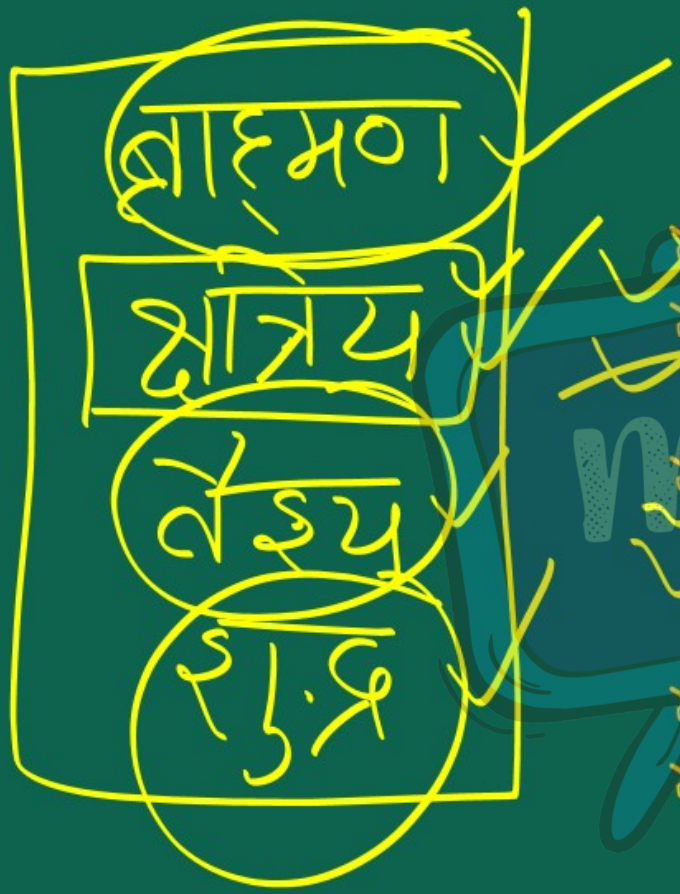

अक्षत्रिय राजा :-

- शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय राजा हो सकते थे।,
- यद्यपि अनेक महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से भी हुई थी।
- मौर्य वंश के उद्भव पर गर्मजोशी से बहस होती है। बौद्ध ग्रंथ उन्हें क्षत्रिय बताते हैं जबकि ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें 'निम्न' कुल का मानते हैं।
- शुंग और कण्व जो मौर्यों के उत्तराधिकारी थे, ब्राह्मण थे।
- वस्तुतः राजनीतिक सत्ता का उपभोग हर वह व्यक्ति कर सकता था जो समर्थन और संसाधन जुटा सके।
- राजत्व क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर शायद ही निर्भर करता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अन्य शासकों को, जैसे शक जो मध्य एशिया से भारत आए, ब्राह्मण मलेच्छ, बर्बर अथवा अन्यदेशीय मानते थे। किंतु संस्कृत के संभवतः आरंभिक अभिलेखों में से एक में प्रसिद्ध शक राजा रुद्रदामन (200 ई.) द्वारा सुदर्शन सरोवर के जीर्णोद्धार का वर्णन मिलता है। इससे यह लगता है कि शक्तिशाली मलेच्छ संस्कृतीय परिपाटी से अवगत थे।



शक शासक को चित्रित करता चांदी का सिक्का (लगभग 200 ई.)

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अक्षत्रिय राजा

धर्मसूत्र

अक्षत्रिय

- एक और दिलचस्प बात यह है कि सातवाहन कुल के सबसे प्रसिद्ध शासक गोतमी-पुत्त सिरी-सातकनि ने स्वयं को अनूठा ब्राह्मण और साथ ही क्षत्रियों के दर्प का हनन करने वाला बताया था। उसने यह भी दावा किया कि चार वर्णों के बीच विवाह संबंध होने पर उसने रोक लगाई। किंतु फिर भी रुद्रदामन के परिवार से उसने विवाह संबंध स्थापित किए।
- इस उदाहरण में देख सकते हैं, जाति प्रथा के भीतर आत्मसात होना बहुधा एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया थी। सातवाहन स्वयं को ब्राह्मण वर्ण का बताते थे जबकि ब्राह्मणीय शास्त्र के अनुसार राजा को क्षत्रिय होना चाहिए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सातवाहन

- वे चतुर्वर्णी व्यवस्था की मर्यादा बनाए रखने का दावा करते थे किंतु साथ ही उन लोगों से वैवाहिक संबंध भी स्थापित करते थे जो इस वर्ण व्यवस्था से ही बाहर थे।
- वे अंतर्विवाह पद्धति का पालन करते थे न कि बहिर्विवाह प्रणाली का जो ब्राह्मणीय ग्रंथों में प्रस्तावित है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

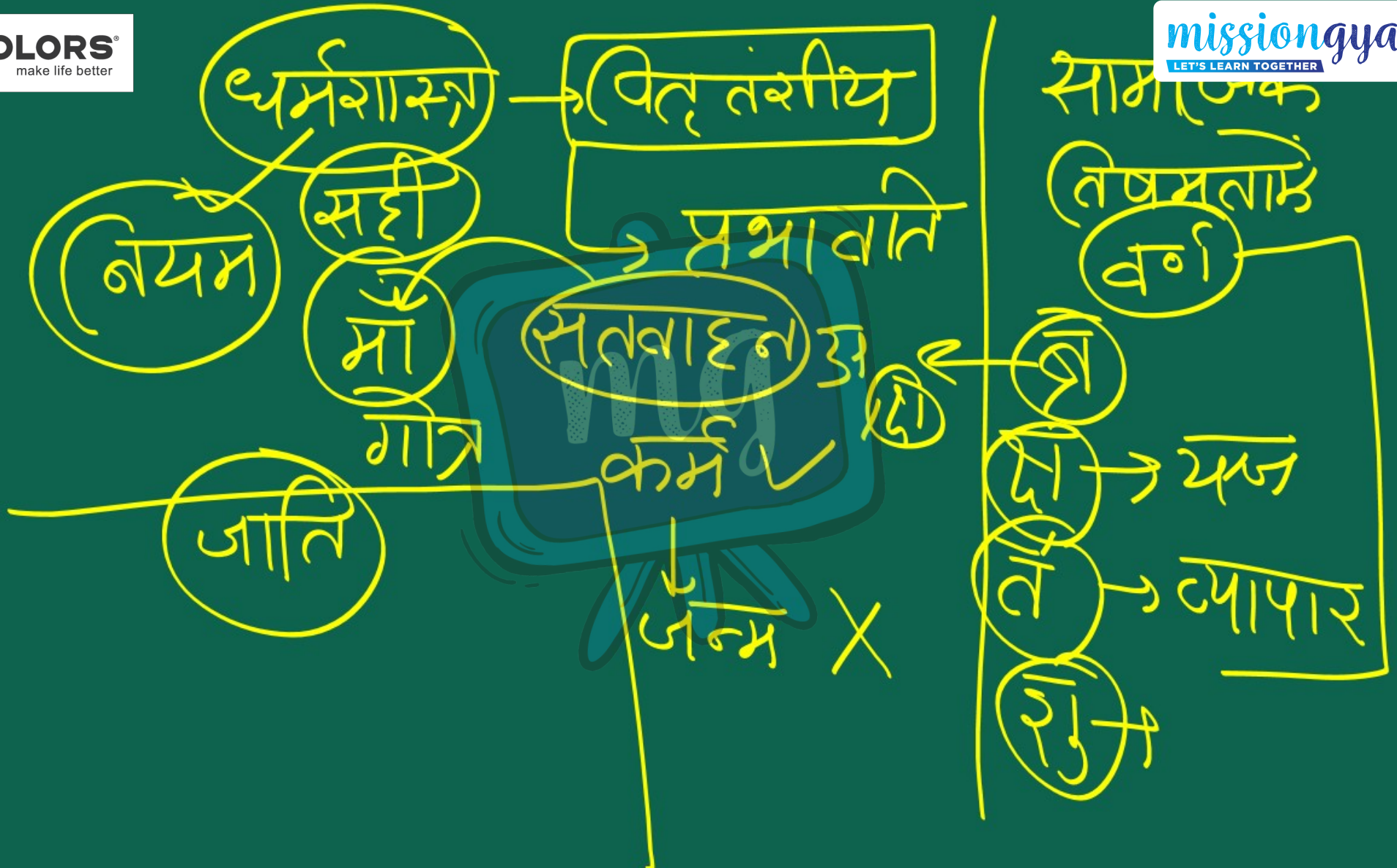

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

